ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

विदिशा के प्रमुख पुरातात्विक स्थल एवं उनका पर्यटन महत्वः 'एक ऐतिहासिक विवेचन'

बी.सी. जोशी
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,
इतिहास विभाग,
शासकीय नर्मदा स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
होशांगाबाद, म.प्र.

नीतेशकौर भाटिया
शोधार्थी
इतिहास विभाग,
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय,
भोपाल, म.प्र.

सारांश

भारत का ह्रदय स्थल मध्यप्रदेश इतिहास, वन सम्पदा एवं नैसर्गिक सौन्दर्य से भरपूर स्थल है। इस प्रदेश का विदिशा जिला इन्ही विशिष्टताओं से परिपूर्ण रहा है। यह मध्यप्रदेश राज्य के पश्चिम में तथा मालवा के उर्वर पठार के उत्तरी छोर पर बसा हुआ है। वह 23.32'' उत्तरी अक्षांश 77.88 पूर्व देशान्तर पर मध्य रेल्वे लाईन पर बीना–भोपाल स्टेशन के बीच स्थित है। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से सड़क मार्ग से 54 कि.मी. और विश्व धरोहर सांची से 10 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

विदिशा का अतीत गौरवपूर्ण है। यह पुरातत्व एवं स्थापत्य कला की दृष्टि से एक समृद्ध क्षेत्र रहा है। सम्पूर्ण जिले में बिखरी पुरातात्विक सम्पत्ति विदिशा के वैभव की ओर संकेत करती है। जिसमे प्राचीन बेसनगर होलियोदोरस स्तम्भ नैसर्गिक सौन्दर्य से भरपूर लोहांगी एवं उदयगिरि की पहाड़ियां तथा बीजामंडल, विजय मंदिर, गुम्बज का मकबरा और सांची जैसे कलात्मक तथा धार्मिक स्थलों का समावेश है। भारत के मध्य में स्थित होने के कारण चारों दिशाओं से राजनीति धर्म एवं कला के जिज्ञासु लोगों का यहां निरन्तर आना–जाना बना रहा। फलस्वरूप विदिशा एक उत्कृष्ट पर्यटक स्थल के रूप में विकसित होने लगा। इस पर्यटन उद्योग ने विदिशा के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस दृष्टि से विदिशा के पुरातात्विक सांस्कृतिक एवं दर्शनीय स्थलों तथा उनके पर्यटन महत्व का अध्ययन प्रासंगिक हो जाता है।

मुख्य शब्द : विदिशा, पुरातात्विक सम्पत्ति, पर्यटन स्थल।

प्रस्तावना

मध्यप्रदेश अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों का केन्द्र बिन्दु रहा है। विदेशी पर्यटकों के लिये प्राचीन भारतीय वास्तु कला तथा वास्तु कला का क्रम विकास बहुत ही रोचक है। उत्कृष्ट नमूने खजुराहो..........उदयगिरी' आदि में मिलते हैं।[1] विदिशा जिले के राजनीतिक इतिहास के उत्थान, विस्तार तथा अवनति की कुछ ऐसी ही कहानी है, जो लगभग एक सहस्त्र वर्षों से भी अधिक सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्राचीन ऐतिहासिक रंगमंच पर हुये अभियानों में अपना विशिष्ट महत्व रखती है। किन्तु सांस्कृतिक माला में इसने जो अगणित चिरसुरचित पुष्प पिरोये हैं, वे राजनैतिक वातावरण को सुगंधित ही नही कर रहे हैं, अपरंच मानव समाज को अभिसंस्कृत करने में समर्थ हो रहे हैं। यहां की धार्मिक परम्परायें, कला व अनेक पुरावशेष भावी सन्तति के लिये स्मृति–चिन्ह तो हैं ही मानव की उस उदात्त पारमार्थिक व अलौकिक प्रेरणा के अविरल स्त्रोत भी है। जिसके माध्यम से मृत्यु लोक से स्वर्गलोक हो जाता है। संघर्षपूर्ण जीवन शांत हो जाता है और प्रगति पथ निर्बाध और सुलभ हो जाता है। भौतिक समृद्धि तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष अत्यंत दुर्लभ है।[2] यही विदिशा जिले की विशिष्टताएं है।

अध्ययन का उद्देश्य

अपने आस पास पड़ोस तथा सुद्रवर्ती क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त करना मानव स्वभाव है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुये विदिशा जिले के उत्कृष्ट एवं समृद्ध पुरातात्विक स्थलों का अध्ययन कर इतिहास के अध्येयताओं को उनके पर्यटन महत्व की जानकारी प्रदान करना प्रस्तुत शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

विदिशा का अतीत गौरवपूर्ण है तथा उसका पुरातत्व तथा इतिहास समृद्ध रहा है। सम्पूर्ण जिले में बिखरी पड़ी पुरातात्विक सम्पति विदिशा के वैभव की और संकेत करती है। इसका उल्लेख महाकाव्यों पुराणों तथा बौद्ध जैन तथा ब्राह्मण साहित्य में मिलता है। अनेक ब्राह्मण, बौद्ध तथा जैन अवशेषों का वर्णन

एक स्थान पर मिलता है। वेसनगर, जो शुंगकाल का पुराना विदिशा है गरूड़ध्वज (हेलिओडोरस स्तम्भ) गुप्तकाल की उदयगिरि की गुफायें, बीजामण्डल, विजय मंदिर और गुम्बज का मकबरा आदि मंदिर इस जिले की सम्पन्न सांस्कृतिक विरासत के परिचायक हैं।[3]

ये सभी पुरातात्विक अवशेष वर्तमान में दर्शनीय स्थल बन गये हैं। जिनका विवरण निम्नानुसार हैः–

विदिशा

यह जिला मुख्यालय नगर अपने वर्तमान रूप में प्राचीन विदिशा का वेसनगर से भिन्न है। वर्ष 1956 तक इसका नाम भेलसा था। उसके बाद उस प्राचीन भव्य नगर के आधार पर इसका नामकरण पुनः विदिशा किया गया। विदिशा मध्य रेलवे की दिल्ली बम्बई मुख्य लाइन पर भोपाल से लगभग 45 कि.मी. की दूरी पर रेलवे स्टेशन है। सड़क द्वारा यह भोपाल से लगभग 54 कि.मी. दूर है।[4] नगर मध्यप्रदेश के अन्य शहरों से सड़क मार्गों से जुड़ा हुआ है। यह नगर बेतवा नदी के तट पर स्थित है। विदिशा जिला भारतवर्ष का प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। मौर्य गुप्तवंश मुगल मराठों एवं सिंधिया वंश द्वारा शासित विदिशा जैन, बौद्ध, ब्राह्मणो के ऐतिहासिक दस्तावेजों से समृद्ध है।[5] ऐतिहासिक नगरी होने के कारण विदिशा की प्राचीन इमारतें और स्थापत्य दर्शनीय हैं। इसके अतिरिक्त यहां प्राकृतिक स्थल और धार्मिक महत्व के स्थान भी देखने योग्य है। विदिशा के निकटवर्ती छोटे नगर अपने में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक धरोहर समेटे हुये हैं।[6]

हैलियोडोरस

विदिशा रेलवे स्टेशन से लगभग 4 कि. मी. दूर वेसनदी के उल्लीतट पर एक पाषाण निर्मित 20'7'' ऊंचा स्तम्भ है। जिसे खामबाबा के नाम से जाना जाता है। इस स्तम्भ पर प्राकृत भाषा में दो लेख हैं, जिसमे लिखा है कि हैलियोडोरस नामक एक यूनानी ने वासुदेव (विष्णु) के सम्मान में इस स्तम्भ के रूप में स्थापित किया था। वह वहां शुगवंश के 9 वें शासक भागभद्र के दरबार में तक्षशिला शासक एण्टियोकस के राजदूत के रूप में आया था। सन् 1963–65 के पुरातात्विक उत्खनन में इस स्तम्भ के समीप चौथी शताब्दी ई.पू. में विष्णु मंदिर के होने की पुष्टि हो चुकी थी।[7] इतिहासकार माहेश्वरी दयाल खरे ने लिखा है कि ''संसार के सर्व प्रसिद्ध स्मारकों में इस स्तम्भ की गणना की जाती है।[8]''

लोहांगी पहाड़ी

नगर के भीतर ऐतिहासिक तथा पर्यटक रूचि की वस्तुएं अधिक नहीं हैं। इनमें से एक लोहांगी शिला है। यह रेलवे स्टेशन के पास एकाकी रेतीले पत्थर का शिखर है। यह शिला लगभग 6,086 मीटर की ऊँचाई तथा 9121 मीटर व्यास के अपेक्षाकृत चपटे शीर्ष वाली लुहांगी का ऊपरी भाग सीधी कगार है, किन्तु उसके ऊपर समतल भाग है।[9] यही कारण है कि यहां लगभग 100 मीटर के व्यास के भीतर मंदिर, मस्जिद आदि स्मारक हैं। इसके अतिरिक्त शुंगकालीन स्तम्भ शीर्ष भी किसी अन्य स्थान से लाकर यहां रख दिया गया है।[10] लोहांगी पहाड़ी के संबंध में स्थानीय लेखक गोविन्द देवलिया ने लिखा है कि, 1456 में खिलजी सुल्तान मोहम्मदशाह प्रथम ने लुहांगी पर कई इमारतें बनवाईं। जिन पर बीजक खड़े हुये हैं। इन इमारतों में स्वास्तिक चिन्ह तथा कारीगरी अभी तक स्पष्ट दिखलाई देती है।[11]

बीजामण्डल विजय मंदिर

प्राचीन विदिशा नगर की स्थानान्तरित बस्ती (भेलसा) के मध्य एक विशाल परमार कालीन मंदिर के भग्नावशेष हैं जिसे बीजामण्डल के नाम से जाना जाता है। वास्तु शिल्प के आधार पर इसका निर्माण 11वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना गया है। यह मंदिर किस देवता को समर्पित है यह कहना दुष्कर है, किन्तु मंदिर के स्तम्भ पर परमार नरेश नरवर्मन के खुदे लेख से संकेत मिलता है कि वह चर्चिका देवी को समर्पित था, जो नवदुर्गा में से एक है। वहां कई प्रकार की देवी मूर्तियां पाई गई हैं। अग्नि पुराण में विजया देवी को चण्डी या दुर्गा का ही रूप बताया गया। संभव है कि नरवर्मन ने अपनी रानी विजया की स्मृति में इसका निर्माण किया हो और कालान्तर में विजया मंदिर का अपभ्रंश होकर बीजामण्डल कहलाने लगा।[12]

इस मंदिर को संभव उस सूर्य मंदिर से भी जोड़ा जाता है जिसका नाम भेल्लस्वामिन मंदिर था और जिनके नाम पर शताब्दियों तक इस नगर का नाम भेलसा कहलाया। बीजामण्डल नाम मूलतः सूर्य मंदिर को इंगित करता है। प्रसिद्ध इतिहासकार मिन्हाज–उस–सिराज ने विदिशा के विजय मंदिर का काफी वर्णन किया है।[13] इस मंदिर के मलबे से ऐसे भी अवशेष प्राप्त हुये हैं जिनको देखने से ऐसा लगता है कि वह शिवमंदिर रहा होगा, वहां के शिवपरिवार की अनेक मूर्तियां, गणेश, गौरी, उमा महेश्वर, आदि प्राप्त हुई हैं। सिहंमुख कार्तिमुख का अलंकरण वहां की विशेषता है। 13वीं शताब्दी में वह मंदिर ध्वस्त हो गया था।

इस मंदिर की कला के संबंध में श्री राजकमल जैन ने लिखा है–''इस परम पवित्र विदिशा नगर में दर्शनीय स्थान हिंदू धर्म के प्रमुख मंदिर हैं जिनमें उत्कृष्ट सांस्कृतिक कला और विज्ञान की दृष्टि से ....लोगों को आश्चर्य में डालने वाली बालाजी मंदिर की छत है।[14]

मंदिर के निकट एक उत्तम श्रेणी की प्राचीन बावड़ी है। इस बावड़ी में दो अलंकृत स्तंभ हैं जो 8–9वीं शती के प्रतिहार कालीन कला के प्रतीक हैं। इन स्तंभों पर कृष्ण लीला के सुन्दर चित्रों का अंकन है।

स्थापत्य की दृष्टि से वह भुमिज शैली का पूर्वाभिमुख पंचावतन प्रकार का मंदिर रहा है। मंदिर के ध्वस्त मलबे से शैव व शाक्त सम्प्रदाय की बहुसंख्यक मूर्तियों व स्थापत्य खंड प्राप्त हुये हैं जो परमार कला स्थापत्य को दर्शाते हैं।

गुम्बज का मकबरा

बीजामण्डल के समीप पत्थर से निर्मित एक छोटा सा मकबरा है। जिसमें दो समाधियां हैं। इसकी छत पर गुम्बद होने के कारण ही इसका नाम गुम्बद का मकबरा हो गया। एक समाधि पर 1487 ई.स. का एक फारसी लेख है जिससे ज्ञात होता है कि वह एक धनी व्यवसायी की कब्र थी।[15]

वेसनगर

विदिशा तहसील का यह छोटा सा गांव विदिशा रेलवे स्टेशन से लगभग तीन कि.मी. पश्चिम में स्थित है

और उसे सड़क द्वारा जोड़ा गया है। यह बेतवा तथा वेस नदी के बीच द्विसाख में स्थित है। सामान्यतः यह माना जाता है कि इस गांव का सम्बन्ध अशोक से रहा है।[16] बौद्धों के पालीग्रंथों जिसका नाम बेस नगर और संस्कृत पुस्तकों में विदिशा दिया गया है।[17] अनेक टीले और चाहर दीवारी शहर की सीमा बना रहीं है। सांची का स्तूप संभवतः इससे संबद्ध था। यहां ईसा पूर्व की तीसरी शताब्दी से ग्यारहवीं शताब्दी के भग्नावेश/पुरावशेष प्राप्त होते रहते हैं। इस स्थल के एक कोने में बने वेश गांव में अब वेसनगर (विदिशा) की स्मृतियां ही शेष हैं।[18]

उदयगिरि

मध्यप्रदेश के विदिशा जिले के रेलवे स्टेशन से चाल मील छोटी पहाड़ी के पूर्व की ओर उदयगिरि की बीस गुफायें हैं। यह बहुत छोटी कोठरियों जैसी हैं जिन्हें मूर्तियों की स्थापना हेतु बनाया गया था। इन्हें उदयगिरि की पहाड़ियों के पूर्वी ढाल को खोदकर तराशा गया है। उदयगिरि की गुफायें ईसा की चौथी व पांचवी शताब्दी की हैं जो गुप्त वंश की अदभुत, अनुपम निर्माण कला का सुन्दर उदाहरण है।[19] उदयगिरि की गुहा में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा निर्मित मंदिरों के बाहर पृथ्वी का उद्धार करते हुये ''वराह''की विशाल मूर्ति मिली है जो अनुपम है।[20] गुफा में गुप्तशासक कुमार गुप्त के शासनकाल की गुफा बनाये जाने का उल्लेख मिलता है।[21] इसके अतिरिक्त पौराणिक कथाओं का उत्कृष्ट शिल्प है तो कुछ में जैन धर्म सम्बन्धी कथाओं का चित्रण [22] भी है।

इसका मध्य भाग गुफा क्रमांक 6,7 के निकट अत्याधिक अवनत है। जहां 12 फुट गहरा तथा 100 फुट लम्बा एक संकरा मार्ग काटकर बनाया गया था जिसका ऊपरी द्वार स्तम्भ कनिंघम ने देखा था।[23] किन्तु अब उसका अवशेष मात्र ही है यह पहाड़ी नरम खेत बालुकारम की है जिसमे समतल परतें हैं जिसके कारण इसके पूर्वी भाग मे अनेक शैलकृत गुफाओं का निर्माण सहज हो सका है। यहां पर कुल बीस गुफायें हैं जिनमे अधिकांश छोटी हैं। किन्तु प्रत्येक के सम्मुख मौलिक रूप मे मंडप रहे होंगे। इन गुफाओं मे गुप्तकालीन कला का क्रमिक विकास रखने को मिलता है।

प्रातः कालीन सूर्य रश्मियां सीधी गुफाओं को प्रकाशित करती हैं। सम्भवतः इसी कारण इस स्थल का नाम उदयगिरि पड़ा। इन गुफाओं में दो जैन धर्म तथा शेष हिन्दू धर्म की हैं। इस पहाड़ी पर मोर्य, शुंग व नागकालीन अवशेष भी देखे गये हैं। जिसमे बौध्द स्तूप भी हैं।[24]

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पर्यटन की दृष्टि से विदिशा एक मनोरम शांत एवं समृध्द क्षेत्र रहा है। प्राचीन काल से ही यह इतिहास एवं संस्कृति का एक उत्कृष्ट केन्द्र रहा है। भारत के मध्य में स्थित होने के कारण चारों दिशाओं से राजनीति, धर्म एवं कला से जुड़े हुये जिज्ञासु लोगों का निरन्तर आना–जाना बना रहा। विदिशा नगर एवं उसके निकटस्थ पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक स्थलों का पर्यटन महत्व बढ़ता गया आधुनिक युग में सड़कों के जाल एवं मुख्य रेलमार्ग के निर्माण ने इसके महत्व में और अधिक वृद्धि की।

यहां के पुरातात्विक, धार्मिक एवं वास्तु–स्थापत्य कला के उत्कृष्ट स्थलों ने पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया। फलस्वरूप विदिशा के पर्यटन महत्व में आशातीत् वृद्धि हुई। वर्तमान में पर्यटन एक लाभकारी उद्योग के रूप में जाना जाता है। देश व प्रदेश के आर्थिक विकास में इसका योगदान भी सराहनीय है। विदिशा में रेल, सड़क परिवहन, आवास (होटल व्यवसाय या काटेज) खरीददारी या स्मृति चिन्ह आदि उद्योग विकसित हुये। बौद्ध धर्म स्थल सांची के स्तूप की निकटता ने चीन, जापान, ताइवान एवं श्रीलंका जैसे देशों के पर्यटकों को भी आकर्षित किया। विदिशा मे पर्यटकों हेतु नई–नई सुविधाओं से सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। पर्यटन की वर्तन प्रक्रिया से आज के समाज में ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना दृष्टिगोचर हो रही है।

टिप्पणी

विदिशा रेलवे स्टेशन से चार मील दूर छोटी पहाड़ी के पूर्व की ओर उदयगिरी नामक बीस गुफायें मिली है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *दास, गुप्ता, डा0 पापिया:द्वितीय संस्करण 2011 पृ.44*
2. *खरे, महेश्वरी दयाल : विदिशा पृ.1985 पृ.1*
3. *श्रीवास्तव, पी. एन. एवं : मध्य प्रदेश जिला गजेटियर विदिशा वर्मा, डा. राजेन्द्र प्रसाद, प्रस्तावना खण्ड से उध्दृत।*
4. *श्रीवास्तव पी. एन. एवं : मध्यप्रदेश जिला गजेटियर विदिशा, 1992 वर्मा, डॉ. राजेन्द्र पृ. 334*
5. *वरे, डॉ. एस.एल. : मध्यप्रदेश का इतिहास व संस्कृति पृ–205*
6. *विदिशा विकिपीडिया : दर्शनीयस्थल पृ.1/3*
7. *जिला पुरातत्व संघ, विदिशा द्वारा प्रकाशित पत्रिका एम.के. माहेश्वरी का आलेख पृ.3*
8. *खरे, माहेश्वरी दयाल : विदिशा 1985 पृ.173*
9. *जैन, मड़वैया, राजकमल : विदिशा वैभव 1969 पृ.219*
10. *खरे, माहेश्वरी दयाल : वही पृ.174*
11. *देवलिया, गोविन्द : दिशायाम् विदिशा प्रथम संस्करण 2014 पृ.10*
12. *माहेश्वरी, एम.के. : विदिशा जिला पुरातत्व संधि विदिशा द्वारा प्रकाशित पत्रिका पृ. 3–4*
13. *देवलिया, गोविन्द : वही*
14. *जैन, मड़वैया, राजकमल: वही*
15. *खरे, माहेश्वरी दयाल : वही पृ.176*
16. *श्रीवास्तव, एवं वर्मा : वही पृ.313*
17. *वरे, डॉ. एस. एल. : पर्यटन में इतिहास का अनुप्रयोग प्रथम संस्करण 2010 पृ.169*
18. *जिला पुरातत्व संघ विदिशा : द्वारा प्रकाशित पत्रिका ''विदिशा'' एम.के. माहेश्वरी का आलेख पृ.3*
19. *वरे, डॉ. एस. एल. : मध्यप्रदेश में पर्यटन 2009 पृ. 35–36*
20. *शर्मा, डॉ. राजकुमार : मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ*
21. *शर्मा, डॉ. श्याम : प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला पत्र मुद्रित संस्करण पृ.83*

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

22. नेगी, डॉ. जगमोहन : राष्ट्रीय संस्कृति संपदा सांस्कृतिक पर्यटन एवं पर्यावरण प्रथम संस्करण 2012 पृ.166
23. कनिंघम आर्क्योलाजी सर्वे ऑफ इण्डिया, रिपोर्ट 1874–75,1876–77 पृ.47
24. खरे, माहेश्वरी दयाल : वही पृ. 177